Appointments

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता का विवेचन

Explanation of quality Teacher Education

गुणवत्ता सम्बन्धी प्रश्नों का सही रूप विवेचन किया जाये तभी विषय का व्यापक स्वरूप समझ सकता है।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर विवेचन के लिए प्रथम प्रश्नों क्या क्यों के स्पष्टीकरण से ही आगे ? पर विचार करना तार्किक एवं व्यवहारिक होगा। इसलिये इस खण्ड में प्रथम दो प्रश्नों क्यों क्या पर कुछ सीमित विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

गुणवत्ता क्या है ? इस सम्बन्ध में एन० बार तथा मिजल ने तीन प्रमुख पक्षों का उल्लेख किया।

1. योग्यता पक्ष (Presage aspects)
2. प्रक्रिया पक्ष (Process aspects)
3. उत्पाद पक्ष (Product aspects)

अध्यापक शिक्षा के द्वारा छात्र अध्यापक में योग्यता तथा शिक्षण का विकास करना है। योग्यता का सीधा सम्बन्ध ज्ञान है। जहाँ तक अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता का प्रश्न है।

Scanned with CamScanner

इस सम्बन्ध में दो मुख्य विचारधाराएं रही हैं।

प्रथम अध्यापक शिक्षा ज्ञान केन्द्रित या ज्ञान पर आधारित अर्थात Knowledge Based teacher Education और द्वितीय विचार कौशल केन्द्रित अर्थात (Skill Based) इन विचारधाराओं पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सेमिनार और सम्मेलन हुए हैं।

दोनों विचारधारायें विरोधी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं लेकिन अध्यापक शिक्षा ज्ञान केन्द्रित है।

प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने ज्ञान को मानव का एक विशेष गुण बताया। अंग्रेजी के निबन्धकार बेकन ने ज्ञान को मानवशक्ति की शक्ति की है।

हमारे पवित्र ग्रन्थ श्रीमद् भगवत गीता में कहा गया है —

{ "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" }

अर्थात ज्ञान से बढ़कर कुछ पवित्र नहीं है।

अध्यापक शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम

Curriculum for Teacher Education

किसी भी संस्थान से आये हुए शिक्षकों की क्षमता उन शिक्षण संस्थानों निर्धारित पाठ्यक्रम पर निर्भर करती है।

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के बारे में कई स्रोतों से शिकायतें मिल रही है।

अध्यापकीय शिक्षा पर तत्कालीन शिक्षा पर साहित्य में की गयी आलोचना से निम्नलिखित बुराइयाँ सामने आती हैं।

1. अध्यापकीय शिक्षा कार्यक्रम बहुत अल्प समय के लिये होता है।
2. अध्यापकीय शिक्षा में अन्तर्गत सिद्धान्त और अभ्यास में कोई सम्बन्ध नहीं है।
3. इसका स्वरूप भारतीय संरचनाओं के अनुरूप नहीं।
4. इसका पाठ्यक्रम इतना शिक्षा को ढंग पुराना हो चुका है।
5. यह आधुनिक शिक्षा पर आधारित व लोचपूर्ण नहीं है।

अध्यापकीय शिक्षा कार्यक्रम के सुधारात्मक आधार

(1) किन राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिये योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की भारत में आवश्यकता है।

(2) हमारे परिवर्तनशील समाज में प्रशिक्षित अध्यापकों का वांछित उत्तरदायित्व क्या है

(3) अपने कार्य में कुशल होने के लिए उन्हें कितनी सामान्य शिक्षा और कितनी व्यवसायिक शिक्षा की आवश्यकता है?

(4) बच्चों साथियों व माता-पिता के साथ सही व्यवहार करने के लिए उन्हें किन योग्यताओं तथा कौशलों की आवश्यकता है?

(5) हमें कितने प्रकार के शिक्षकों की विद्यालयों में आवश्यकता है। जहाँ हमारे देश के नागरिक या देश की मानव आर्थिक का विकास किया गया है?

(6) हमारे देश में शिक्षकों के प्रशिक्षण किस तरह यहाँ के शिक्षा के स्तर को प्रभावित करते हैं।

OCTOBER '19
M T W T F S S
1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31
September 08
Wk 36 Sunday
2019
Day 251-114
Appointments

एन० सी० मजूमदार –

वर्तमान में हमारी प्रगति अध्यापक प्रशिक्षण की ओर अध्यापक शिक्षा की ओर बढ़ रही है जिसके फलस्वरूप प्रशिक्षण संस्थाओं में हम शिक्षकों को शिक्षक का अधिक कार्य स्तर कौशल देने से संतुष्ट नहीं हैं।

इस सम्पूर्ण व्यावसायिक प्रगति का प्रभाव अध्यापकीय पाठ्यक्रम में स्वाभाविक रूप से प्रदर्शित होता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम निर्मित करते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना होगा।

① मूलभूत ज्ञान को विकसित किये बिना और बिना समझे शिक्षक अपने कक्षा कार्य को पूरा नहीं कर सकता।

② आने वाले शिक्षक में विकास प्रक्रिया को समझने की क्षमता का निर्माण करना है।

③ आरंभिक शिक्षक में मूलभूत कौशल तथा व्यावहारिकता का होना है।

④ कम से कम कुछ शिक्षकों में नैतिक भावनाओं का विकास किया जाना ताकि शिक्षण में परीक्षण एवं अनुसंधान किया जा सके।

M	T	W	T	F	S	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Appointments

शिक्षा आयोग (1964-66) की रिपोर्ट के प्रकाशन से शिक्षक के गुणों पर अत्यधिक जोर दिया जाने लगा है।

कोठारी आयोग के अनुसार :

भारत के भविष्य को कक्षाओं में निर्मित किया जा रहा है। आज का संसार जो कि विज्ञान तथा तकनीक पर आधारित है, यहां केवल शिक्षा ही लोगों में उन्नति तथा कल्याण के लिए कार्य कर सकती है।

आयोग यह स्वीकार करता है कि शिक्षा ही राष्ट्र को भोजन की प्राप्ति आत्म निर्भर आर्थिक विकास पूर्ण रोजगार, राजनैतिक विकास, सामाजिक तथा राष्ट्रीयकरण की ओर ले जा सकती है।

"शिक्षा के स्तर को जो बातें प्रभावित करती हैं तथा उसको जो योगदान राष्ट्र के विकास में है उसमें सबसे महत्वपूर्ण बात शिक्षक के गुण, योग्यता तथा चरित्र है।

भारत में माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षा एक शतक से भी अधिक पुरानी है। शिक्षा का क्षेत्र सीमित था तथा कक्षा प्रबन्धन श्यामपट्ट कार्य जैसी पद्धति से चलता है।

Scanned with CamScanner